International Journal of Education and Science Research Review

IJESRR

E-ISSN 2348-6457

Volume-9, Issue-1 Jan-Feb-2022

P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org

Email- editor@ijesrr.org

# ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक उत्थान में स्वयं सेवी संस्थाओं की भूमिका

डॉ. वीना रानी

## सार

महिला सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें महिलाएं अपने कल्याण को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने के लिए मौजूदा मानदंडों और सांस्कृतिक को चुनौती देती हैं। स्वयं सहायता समूह में महिलाओं की भागीदारी ने सामाजिक और आर्थिक दोनों पहलुओं में उनके सशक्तिकरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला, यह अध्ययन स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को संबोधित करता है। अध्ययन के लिए आवश्यक जानकारी केवल स्रोतों से एकत्र की गई है। स्वयं सहायता समूह का लाभार्थियों के आर्थिक और सामाजिक दोनों पहलुओं पर अधिक प्रभाव पड़ा है।

अध्ययन देश में विभिन्न स्वयं सहायता समूहों से संबंधित महिलाओं की वित्तीय और सामाजिक सशक्तिकरण स्थिति की पुष्टि करने पर केंद्रित था। स्वयं सहायता समूह एक गांव–आधारित वित्तीय मध्यस्थ समिति है जो आमतौर पर 10–20 स्थानीय महिलाओं या पुरुषों से बनी होती है। भारत में, कई स्वयं सहायता समूह बैंकों से जुड़े हुए हैं। प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्वयं सहायता समूह सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण दोनों लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहे हैं।

**मुख्य शब्दः**

स्वयं सहायता समूह, महिला अधिकारिता, महिला सशक्तिकरण, महिला भागीदारी ।

## भूमिका

स्वयं सहायता समूह गांव के लोगों का एक छोटा सा संघ है, अधिमानतः एक ही सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से। वे अपनी सामान्य समस्याओं को हल करने के उद्देश्य से एक साथ जुड़ते हैं। स्वयं सहायता समूह अपने सदस्यों की वित्तीय स्थिति में सहायता करता है। स्वयं सहायता समूह अपने सदस्यों के बीच छोटी बचत को बढ़ावा देता है और बचत को बैंक के पास रखा जाता है। आम तौर पर, एक स्वयं सहायता समूह में सदस्य 20 तक सीमित होते हैं। मुख्य रूप से स्वयं सहायता समूह सदस्य महिलाएं हैं। स्वयं सहायता समूह महिलाओं को उनके पारिवारिक मामलों के साथ–साथ समाज में भी भाग लेने में मदद करता है।

स्वयं सहायता समूह या संक्षेप में स्वयं सहायता समूह अब एक प्रसिद्ध अवधारणा है। अब यह लगभग दो दशक पुराना है। स्वयं सहायता समूह आज ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी उन्मूलन में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। यह बताया गया है कि देश के आर्थिक विकास को गति देने में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका है। स्वयं सहायता समूह अब एक आंदोलन के रूप में विकसित हो गए हैं। मुख्य रूप से स्वयं सहायता समूह की सदस्य महिलाएं हैं।

नतीजतन, देश के आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। वे अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारी अर्थव्यवस्था में कुल मानव संसाधन का लगभग पचास प्रतिशत महिलाएं हैं। इससे महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को गति मिली है।

फिर भी महिलाएं पुरुषों के अधीन हैं क्योंकि वे कई सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं के अधीन हैं। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में स्थिति अधिक गंभीर है। गरीबी उन्मूलन, आर्थिक विकास को बढ़ाने और बेहतर जीवन स्तर के लिए महिला विकास गतिविधियों को महत्व दिया जाना चाहिए। स्वयं सहायता समूह अपने सदस्यों के बीच छोटी बचत को बढ़ावा देता है।

आमतौर पर स्वयं सहायता समूह में 10 से 20 महिलाएं होती हैं। महिलाएं कुछ राशि बचाती हैं जो वे वहन कर सकती हैं। यह रुपये से लेकर 10 से 200 प्रति माह छोटी राशि है। एक मासिक बैठक आयोजित की जाती है, जहां ऋण के वितरण और पुनर्भुगतान के अलावा औपचारिक और अनौपचारिक चर्चाएं होती हैं। इन समूहों में महिलाएं अपने अनुभव साझा करती हैं।

इन बैठकों के कार्यवृत्त का दस्तावेजीकरण किया जाता है और लेखे लिखे जाते हैं। किसी भी ेभ्ळ में अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष तीन आधिकारिक पद होते हैं। यदि स्वयं सहायता समूह कुछ गैर सरकारी संगठनों से जुड़े हैं, तो वे उन गैर सरकारी संगठनों की अन्य सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। हाल ही में, विभिन्न सूक्ष्म–वित्तीय समूहों की संगठनात्मक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। थ्रिफ्ट समूह, क्रेडिट प्रबंधन समूह, आय उत्पन्न करने वाले समूह, स्वयं सहायता समूह और पारस्परिक सहायता समूह हैं। कभी–कभी स्वयं सहायता समूह को बढ़ावा देने वाली संस्था खुद कर्ज की सुविधा मुहैया कराती है।

स्वयं सहायता समूह (ेभ्ळ) आज ग्रामीण भारत में गरीबी उन्मूलन में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। भारत के विभिन्न हिस्सों में गरीब लोगों (ज्यादातर महिलाएं) की बढ़ती संख्या स्वयं सहायता समूह के सदस्य हैं और बचत और ऋण के साथ–साथ अन्य गतिविधियों (आय सृजन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, साक्षरता, बाल देखभाल और पोषण, आदि) में सक्रिय रूप से संलग्न हैं। स्वयं सहायता समूह में एसध्सी फोकस सबसे प्रमुख तत्व है और पूंजी पर कुछ नियंत्रण बनाने का अवसर प्रदान करता है। गरीबों के सशक्तिकरण में तीन बुनियादी आयाम शामिल हैं–गरीबी में कमी, रोजगार का सृजन और असमानता को मिटाना।

भारत में स्वयं सहायता समूह के दृष्टिकोण ने गरीबों को आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक उत्थान के एक नए क्षेत्र में ले जाने के लिए एक प्रभावी और व्यवहार्य चौनल के रूप में मजबूत जड़ें जमा ली हैं। भारत आने वाले दशक में कुल गरीबी को खत्म करने के लिए सूक्ष्म वित्त की सफलता का प्रदर्शन करके व्यावहारिक समाधान प्रदान करने के लिए तैयार है। अब लगभग 560 बैंक जैसे और 3,024 से अधिक एनजीओ सामूहिक रूप से और सक्रिय रूप से स्वयं सहायता समूह आंदोलन को बढ़ावा देने में शामिल हैं।

स्व–सहायता का उद्देश्य ग्रामीण लोगों के लिए लाभप्रदता बढ़ाना है। इस देश की कम आर्थिक वृद्धि को पूंजी संसाधनों की कमी के कारण माना जाता था, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। कम पूंजी, कम उत्पादकता, कम आय, कम बचत और कमजोर पूंजी आधार का एक दुष्चक्र एक स्थायी गरीबी को संचालित करने वाला माना जाता था। इसलिए, सूक्ष्म वित्त पोषण स्वयं सहायता समूह जैसी सस्ती ग्रामीण ऋण नीतियां ग्रामीण गरीबों को पर्याप्त पूंजी तक पहुंच प्रदान करने के लिए तैयार की गई थीं।

स्वयं सहायता समूह के माध्यम से माइक्रोफाइनेंस गरीबों के लिए न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक, मानसिक और व्यवहारिक रूप से उन्हें ऊपर लाने के लिए एक सीढ़ी बन गया है और सबसे ऊपर उन्हें शोषक साहूकारों के गढ़ से तोड़ने में मदद करता है।

राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW) – (महिलाओं की स्थिति 2011) की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक समय तक काम करती हैं। कुल गतिविधियों में अवैतनिक गतिविधियों का अनुपात महिलाओं के लिए केवल 33 प्रतिशत की तुलना में 51 प्रतिशत है। इस अवैतनिक कार्य के अलावा, उनके पास घर की देखभाल करने की जिम्मेदारियां हैं जिसमें खाना बनाना, सफाई करना, पानी और ईंधन लाना, मवेशियों के लिए चारा इकट्ठा करना, पर्यावरण की रक्षा करना और परिवार में कमजोर और वंचित व्यक्तियों को स्वैच्छिक सहायता प्रदान करना शामिल है।

इससे पता चलता है कि हालांकि महिला सशक्तिकरण की दिशा में अभी एक लंबा सफर तय करना है। महिलाएं नियमित रूप से छोटी राशि बचाती हैं और एक आम फंड में योगदान करने के लिए परस्पर सहमत होती हैं। लेकिन यह उनकी सभी जरूरतों को पूरा नहीं करता है। ऋणग्रस्तता ग्रामीण जीवन की पहचान बन गई है।

सामाजिक सशक्तिकरण का अर्थ है कि महिला को अपने परिवार और समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए, और उसे उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम बनाने का अधिकार होना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप आत्म–विश्वास, आत्म–सम्मान और आत्म–सम्मान का भी विकास हुआ है। और गरीब घरेलू महिलाओं के जीवन स्तर को ऊपर उठाना।

**स्वयं सहायता समूह के माध्यम से भारत में ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण**

वैदिक काल में महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा और अधिकार प्राप्त थे। लेकिन मध्यकालीन भारत में मुस्लिमों के प्रवेश के साथ महिलाएं अवर लिंग बन गईं। इस अवधि के दौरान कन्या भ्रूण हत्या, सती, देवदासी परंपरा और बाल विवाह जैसी कई बुरी प्रथाएं चलन में थीं। कुछ महान महिला शासकों के बावजूद भारत में महिलाओं की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। ब्रिटिश काल के दौरान आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति थोड़ी ऊपर उठी। उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा प्रणाली की शुरुआत की, जिससे विभिन्न महिला लेखकों का उदय हुआ।

स्वयं सहायता समूह ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गरीबी को कम करने और महिलाओं के सशक्तिकरण में एक शक्तिशाली साधन बन गए हैं। उन्होंने स्वरोजगार, उद्यमिता विकास और महिलाओं की भलाई के बारे में जागरूकता पैदा की।

एक अध्ययन में कहा गया है कि भारत में गैर सरकारी संगठनों ने ग्रामीण विकास में सरकार के लिए एक मध्यस्थ भूमिका निभाई है और ग्रामीण क्षेत्रों में कई स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण परिवारों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार किया है। एनजीओ और स्वयं सहायता समूह की मदद से बैंक गैर–निष्पादित आस्तियों के डर के बिना ऋण की एक छोटी राशि के साथ जरूरतमंदों तक पहुंच सकते हैं। एक अन्य अध्ययन यह भी पुष्टि करता है कि स्वयं सहायता समूह ने वाणिज्यिक बैंकों, सहकारी बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, नाबार्ड और गैर सरकारी संगठनों के साथ अपने नेटवर्क के माध्यम से गरीबों को वित्तीय सेवाओं में सुधार किया है और समाज में उनकी स्थिति को ऊपर उठाया है। इस प्रकार स्वयं सहायता समूह लाभकारी रोजगार बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

भारत में स्वयं सहायता समूह के बारे में एक अध्ययन में पाया गया कि लगभग 59प्रतिशत नमूना परिवारों ने संपत्ति में वृद्धि दर्ज की और 47.9 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह से पहले की स्थिति से गरीबी रेखा से ऊपर चले गए। इस प्रकार सामाजिक सशक्तिकरण सदस्यों के आत्मविश्वास के स्तर में सुधार, परिवार के भीतर उपचार, संचार कौशल और अन्य व्यवहार संबंधी पहलुओं के संदर्भ में स्पष्ट था।

महिला सशक्तिकरण के तीन आयामों अर्थात् आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक का उल्लेख किया गया था। महिलाओं के दैनिक जीवन में निर्णय लेने की शक्ति कम होती है। स्वयं सहायता समूह और उसके सूक्ष्म उद्यमों के कारण यह स्थिति बदल रही है। एक अन्य अध्ययन में कहा गया है कि 60 प्रतिशत महिलाएँ कृषि और संबद्ध गतिविधियों से संबंधित आर्थिक गतिविधियाँ करती हैं। एक अध्ययन में भारत में महिलाओं की सकारात्मक छवि को लाने के लिए एक व्यवस्थित और नियोजित दृष्टिकोण दिया गया था। महिलाओं के अपनी बचत, ऋण और आय पर नियंत्रण में भारी सुधार हुआ। गैर सरकारी संगठन भी महिलाओं के लिए सुविधाओं में सुधार करने में सरकारी एजेंसियों के साथ समान भूमिका निभाते हैं। स्वयं सहायता समूह एमएफ (सूक्ष्म–वित्त ) कार्यक्रमों के माध्यम से बैंकिंग आदतों का सकारात्मक कार्य है।

ग्रामीण लोगों और गरीबों के बीच बचत की आदतों का विकास, बेहतर प्रौद्योगिकी के लिए मार्ग प्रशस्त करना और विभिन्न प्रचार सहायता तक पहुंच की पहचान की गई। महिलाओं की शिक्षा और साक्षरता दर बहुत बड़ा योगदान देती है, और महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने और सशक्त बनने में मदद करती है।

स्वयं सहायता समूह द्वारा बार–बार आयोजित की जाने वाली समूह बैठकें महिलाओं को दैनिक दिनचर्या से बाहर निकलने और आपस में समस्या साझा करने का अवसर देती हैं। यह मूल कारण का विश्लेषण करने और व्यक्तिगत दोषों से परे जाने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह समूह संपर्क एक ऐसा मंच तैयार करता है जहां व्यक्तिगत समस्याओं पर सामाजिक पैटर्न के रूप में चर्चा की जाती है और नकारात्मक भावनाओं को स्वयं की तुलना में पर्यावरण पर दोष दिया जा सकता है।

स्वयं सहायता समूह के भीतर और अन्य सदस्यों के साथ महिलाओं के साथ बातचीत से आत्मविश्वास का स्तर और मुखरता और उसके हितों को आगे बढ़ाने के लिए जोखिम बढ़ता है। बेहतर संचार, बेहतर नेटवर्किंग और अधिक गतिशीलता भी महिला सशक्तिकरण में योगदान करती है। महिलाओं पर सामाजिक दबाव का उनके निर्णय लेने में अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। एसएचपीआई और स्वयं सहायता समूह की बातचीत महिलाओं को सार्वजनिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है, समाज और स्थानीय राजनीति में अपने हितों को आगे बढ़ाने की उनकी क्षमता को मजबूत करती है।

स्थानीय सरकारों में महिला प्रतिनिधित्व में वृद्धि से भी महिलाएं सशक्त होती हैं। महिला सशक्तिकरण केवल एक परिणाम नहीं बल्कि एक प्रक्रिया है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बदलाव आया है और उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। स्वयं सहायता समूह की आय, व्यय और बचत जैसी आर्थिक गतिविधियां काफी सफल हैं। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से माइक्रो क्रेडिट चेक ग्रामीण महिलाओं के समग्र विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। महिलाओं में रचनात्मक क्षमता, आसान अनुकूलन क्षमता और असफलताओं का सामना करने की क्षमता होती है।

लगभग दो दशक पहले नाबार्ड द्वारा शुरू किया गया स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज प्रोग्राम (स्वयं सहायता समूह–बीएलपी) ग्रामीण गरीबों के 500 स्वयं सहायता समूह को जोड़ने के एक पायलट से 80 लाख समूहों को पार कर गया है। यह कार्यक्रम 37,000 करोड़ की समूह बचत और 51,545 करोड़ के बकाया ऋण का दावा करता है। इस प्रकार यह मॉडल वित्तीय सेवाओं में सबसे सफल मॉडल के रूप में उभरा है। यह बचत मॉडल एक सफल सशक्तिकरण उपकरण है जिसने देश के लगभग 10 करोड़ परिवारों को कवर किया है। लगभग 86 प्रतिशत समूह विशेष रूप से महिला समूह हैं, जो महिला सशक्तिकरण के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन है। इस कार्यक्रम के तहत दिए गए प्रशिक्षण से स्वयं सहायता समूह सदस्यों ने बैंकों का अच्छा ग्राहक बनना भी सीख लिया है।

सामाजिक आर्थिक और जाति जनगणना के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्र मे 1794 लाख से अधिक घरों में से, लगभग 1337 लाख परिवारों की मासिक आय 5,000 रुपये से कम है, जो कुल घरों का लगभग 75 प्रतिशत है। ये सभी परिवार आर्थिक रूप से पिछड़े और वंचित वर्ग के प्रतीत होते हैं। ये परिवार स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज कार्यक्रम के संभावित खंड का गठन करते हैं।

स्वयं सहायता समूह में भागीदारी का एक परिणाम एक महिला की ऋण तक पहुंच में सुधार है। चूंकि यह परियोजना महिलाओं की ऋण तक सीधे पहुंच में सुधार करने के लिए कार्यान्वयन में शायद बहुत जल्दी है। कुछ सफल समूहों के अनुसार, स्वयं सहायता समूह में भागीदारी के कारण वित्तीय गतिशीलता से जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

कुल मिलाकर, कई परिवार अपनी बुनियादी जरूरतों को पहले से बेहतर तरीके से पूरा करने में सक्षम थे। कुछ गैर सरकारी संगठनों की रिपोर्टों से पता चला है कि महिलाओं द्वारा ऋण चुकाने का रिकॉर्ड अक्सर पुरुषों की तुलना में बेहतर था, और महिलाओं द्वारा अर्जित आय को अपने परिवारों पर खर्च करने की अधिक संभावना थी, जिससे गरीबों के स्वास्थ्य और पोषण में सुधार हुआ। जनसंख्या और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए।

जैसे–जैसे बैंकों, ग्राम पंचायतों, विभिन्न सरकारी समितियों आदि में महिला की उपस्थिति बढ़ी है, उसकी सामाजिक स्थिति कुछ हद तक उन्नत दिखाई देती है। स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम के सामाजिक प्रभाव से निर्णय लेने में भागीदारी बढ़ी, विभिन्न कार्यक्रमों और संगठनों के बारे में जागरूकता बढ़ी, ऐसे संगठनों तक पहुंच बढ़ी, स्वास्थ्य और विवाह आयोजनों पर खर्च में वृद्धि हुई, अब परिवारों के पुरुष सदस्यों के दृष्टिकोण में बदलाव आया है। वे स्वयं सहायता समूह की अवधारणा के बारे में आश्वस्त हैं और महिलाओं को बैठकों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और महिलाओं ने बताया कि उनके नाम पर बचत है और यह उन्हें आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान बढ़ाता है।

स्वयं सहायता समूह में भागीदारी के प्राथमिक लाभों में से एक नियमित रूप से बचत करने, औपचारिक बचत संस्थानों तक पहुंचने और इन बचतों के प्रबंधन में भाग लेने का अवसर है। वे नियमित रूप से बचत करते हैं, अपने स्वयं के बैंक खाते रखते हैं और इन खातों में जमा करते हैं। स्वयं सहायता समूह सदस्यों पर उनकी गाढ़ी कमाई को बचाने की उनकी क्षमता पर अच्छा प्रभाव डाल रहा है।

## निष्कर्ष

स्वयं सहायता समूह ने महिला सशक्तिकरण और गरीबी कम करने के तरीकों की पहचान की है। उन्होंने अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को विकसित करके योगदान दिया है। वे अपनी आय, व्यय और बचत की आदतों को बढ़ाकर महिलाओं को सशक्त भी बनाते हैं। स्वयं सहायता समूह की सफलता के प्रमुख कारण गरीब लोगों के

साथ इसका जुड़ाव, इसकी नवोन्मेषी प्रथाएं, विकास में लोगों की भागीदारी को सक्षम बनाने की क्षमता और हितधारकों के बीच विभिन्न स्तरों पर विश्वास निर्माण है। स्वयं सहायता समूह परिवारों की वित्तीय स्थिति में भी मदद करते हैं। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास और स्वतंत्रता विकसित की है, जिससे ग्रामीण लोगों की आजीविका में वृद्धि हुई है।

## संदर्भ


- विनयमूर्ति ए, पिथोडा वी। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिला सशक्तिकरणः उत्तरी तमिलनाडु में एक केस स्टडी। इंडियन जर्नल ऑफ मार्केटिंग। 2017 नवंबरय 37(11): 32.5
- बसु पी. ग्रामीण भारत में जीवन की गुणवत्ता में सुधार में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका। मार्केटिंग मास्टरमाइंड। 2015, 4(5) : 57–61
- सीबेल एचडी, खडका एस. स्वयं सहायता समूह बैंकिंगः बहुत गरीब सूक्ष्म उद्यमियों के लिए एक वित्तीय प्रौद्योगिकी। बचत और विकास। 2012, 26(2) : 133–50
- पुहाझेंडी वी, सत्यसाई केजेएस। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरणः एक भारतीय अनुभव। नेशनल बैंक समाचार समीक्षा। 2002, 18(2) : 39–47
- सुगुन बी. ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए रणनीतियाँ। समाज कल्याण। 2012 अगस्त, 49(5) : 3–6 ।
- विल्ली सी. स्वयं सहायता समूह – सूक्ष्म उद्यम। तमिलनाडु जर्नल ऑफ को–ऑपरेशन। 2013 अप्रैल, 3(6) : 1–15
- रामलक्ष्मी सी.एस. स्वयं सहायता समूह के माध्यम से सशक्तिकरण। आर्थिक राजनीतिक साप्ताहिक। 2013, 20(12) : 1238–42 ।
- कृष्णा कुमारी डीबी, वाणी सी. मीडिया फॉर जेंडर एम्पावरमेंट। समाज कल्याण। 2014 अक्टूबर, 51(7) : 37–40